❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य समाज की सभी चल रही योजनाओं प्रकल्पों, वेबसाइट, मोबाइल एप्लीकेशन, सोशल मिडिया हैंडल्स का उपयोग करने हेतु
8750-200-300
मिस्ड कॉल करें
SMS पर प्राप्त होने वाला लिंक खोलें

वर्ष 48, अंक 6 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 2 दिसम्बर, 2024 से रविवार 8 दिसम्बर, 2024
विक्रमी सम्वत् 2081 सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं आर्यसमाज स्थापना के 150वें वर्ष के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला

ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति एवं संस्कृति मन्त्रालय के विशेष सहयोग से

आर्यसमाज स्थापना के 150वें वर्ष के कार्यक्रमों का शुभारम्भ

रविवार 15 दिसम्बर, 2024

स्थान: भारत मंडपम, प्रगति मैदान, नई दिल्ली

समय: प्रात: 9:30 बजे से

विशेष अनुरोध

1. साप्ताहिक यज्ञ एवं सत्संग करें संक्षिप्त - रविवार 15 दिसम्बर, 2024 को होने वाले साप्ताहिक यज्ञ एवं सत्संग को यदि आप उचित समझें तो संक्षिप्त कर दें तथा समस्त आर्यसमाजों, प्रान्तीय सभाओं, आर्य संगठनों के अधिकारी एवं सदस्यगण दलबल सहित अधिकाधिक संख्या में प्रात: 9:20 बजे तक अवश्य ही पहुंचकर अपना स्थान ग्रहण कर लें।

2. बसों की व्यवस्था कर लें - कृपया अपनी आर्यसमाज की ओर से बसों की व्यवस्था करके अपने परिवार, समाज के समस्त सदस्यों और इष्टमित्रों के परिवार के साथ अधिकाधिक संख्या में पहुंचें।

3. समारोह में भाग लेने के लिए आने वाली बसों एवं सार्वजनिक वाहनों का प्रवेश प्रगति मैदान गेट नं. 1 से होगा।

4. प्रात:राश - आर्यसमाजें अपने सदस्यों के प्रात:राश की व्यवस्था स्वयं करें और अपनी बस में ही ग्रहण करके मंडपम में पहुंचें।

5. उत्साह के साथ आने की करें तैयारी - कृपया कार्यक्रम की एकरूपता एवं भव्यता के लिए अपने घर से ही पीतवस्त्र, केसरिया टोपी और भारतीय वेशभूषा- कुर्ता-पायजामा/साड़ी पहनकर पधारें।

6. करें धन्यवाद और आभार - महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती विशेष स्मृति डाक टिकट के साथ सैल्फी लेकर विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर प्रचार करें और भारत सरकार का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त करें।

7. आर्थिक सहयोग - समारोह के आयोजन हेतु आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। कृपया आर्यसमाज/संस्था की ओर से अधिकाधिक राशि का चैक 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम प्रदान करने की कृपा करें। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।

सुरक्षा कारणों हेतु कृपया ध्यान दें -

1. मंडपम में किसी भी प्रकार के बैग, पानी की बोतल, खाने-पीने का सामान, चाकू-छुरी, धातु का कोई भी नुकीला सामान लाने की अनुमति नहीं होगी।
2. प्रवेश करने में सुरक्षा कारणों से समय लग जाता है अत: कृपया समय से प्रात: 9:20 बजे तक अवश्य ही पहुंचे।
3. आयोजन को भव्य, सुन्दर और सुव्यवस्थित बनाने के लिए कृपया आपकी आर्यसमाज/संस्था से पधारने वाले महानुभावों की संख्या श्री सन्दीप आर्य जी 9650183339 को नोट करा दें।

आइए, पहुंचे भारत मंडपम, प्रगति मैदान,
महर्षि दयानंद सरस्वती का करें गुणगान।
आर्य समाज स्थापना का 150वां वर्ष,
भव्य आयोजनों का होगा शुभारंभ।
डाक टिकट का लोकार्पण जब करेंगे,
रक्षामंत्री, राजनाथ सिंह, भारत सरकार।
गुंजायमान हो उठेगा पूरा भारत मंडपम,
होगी मर्हिष दयानंद की जय-जय कार ।
ऐतिहासिक पलों के बनें हम साक्षी,
बीता हुआ समय कभी नहीं आता वापसी।
आइए, मिलकर चलें, समय से पूर्व पहुंचे,
आर्यसमाज संगठन शक्ति का परिचय दें।
पूर्ण उमंग, उत्साह और उल्लास के साथ,
फिर से रचेंगे एक नया स्वर्णिम इतिहास।

-: निवेदक :-

सुरेन्द्र कुमार आर्य	सुरेशचन्द्र आर्य	प्रकाश आर्य	धर्मपाल आर्य	सुरेन्द्र रैली
अध्यक्ष	प्रधान	सदस्य	प्रधान	प्रधान
ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आ.समिति	सार्वदेशिक आर्य प्र.सभा कोर कमेटी, नई दिल्ली		दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा	आर्य के.स. दिल्ली

★ ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति ★ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली★ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ★ आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली

देववाणी-संस्कृत

विशाल बाहु परमेश्वर को अपनी रक्षा के लिए पुकारते हैं

वेद-स्वाध्याय

बृबदुक्थं हवामहे सृप्रकरस्नमूतये। साधु कृण्वन्तमवसे।।
-ऋ० 1।91।13
ऋषिः-काण्वो मेधातिथिः।। देवता- इन्द्रः।। छन्दः-गायत्री।।

शब्दार्थ-बृबदुक्थम्= स्तुति करने योग्य इन्द्र को **ऊतये** = रक्षा के लिए **हवामहे** = हम पुकारते हैं जो इन्द्र **सृप्रकरस्नम्**= सब जगह फैली हुई भुजाओं वाला है **अवसे** = जो पालन पोषण के लिए **साधु** कृण्वन्तम् = कल्याण ही करने वाला है।

विनय- हे परमेश्वर! हम तुम्हें रक्षा के लिए पुकारते हैं। इस संसार में बहुत-से क्लेश, दु:ख और आपत्तियाँ हम पर आती हैं, बहुत-से भय उपस्थित होते रहते हैं। उस समय में हे परमेश्वर! हम तुम्हें ही याद करते हैं। तुम्हारे सिवा क्लेश में हम और किसे पुकारें? क्योंकि हम जानते हैं कि तुम्हीं एकमात्र रक्षक हो। जब तुम रक्षा करना चाहते हो तो सैकड़ों विपत्तियों के बादलों को क्षणभर में उड़ा देते हो, सैकड़ों बन्धनों को एकक्षण में काट देते हो। जहाँ रक्षा का कोई भी उपाय दिखाई नहीं देता, अन्तिम नाश ही दीख रहा होता है, बच जाने की जहाँ हम कोई कल्पना तक नहीं कर सकते, वहाँ पर भी तुम्हारे अदृश्य हाथ पहुँचे हुए हमारी रक्षा कर देते हैं। तुम्हारे रक्षा करने वाले हाथ प्रत्येक स्थान पर और प्रतिक्षण पहुँचे हुए हैं। इसलिए हे सृप्रकरस्न! हम कभी भी आशा नहीं छोड़ते कि तुम हमें बचा न लोगे, अत: हम तुम्हें पुकारते जाते हैं। तुम यदि रक्षा नहीं भी करते तो भी हम अशान्त नहीं होते, क्योंकि हम जानते हैं कि तुम्हारी अरक्षा में भी रक्षा छिपी होती है। हे देव! हमें अटल विश्वास है कि तुम कल्याण ही करनेवाले हो। तुमसे अकल्याण कभी हो ही नहीं सकता। हम नहीं समझ पाते हैं कि स्पष्ट दीखने वाली अमुक आपत्ति किस प्रकार कल्याण के रूप में बदल जाएगी, हमारा विनाश कैसे भलाई का लाने वाला होगा, परन्तु अनुभवों द्वारा अन्तस्तल पर यह विश्वास निहित है कि तुम अपनी प्रत्येक घटना द्वारा हम लोगों का भला ही कर रहे हो और अन्तत: तुम हमारी पालना करोगे, हमें बचा लोगे। हमारा अत्यन्त विनाश तुम कभी नहीं होने दे सकते, अत: हम तुम्हें ही रक्षा के लिए पुकारते हैं। सदा ऐसे विलक्षण ढङ्ग से सबका कल्याण करते हुए तुम हमारी निश्चित रक्षा करनेवाले हो। हमारे कल्याण के लिए अपने रक्षक बाहुओं को प्रत्येक क्षण में और प्रत्येक स्थान में फैलाए बैठे हो। तुम्हारे सिवाय मनुष्य के लिए और कौन स्तुत्य है? मनुष्य और किसके गीत गाये? तुम्हारी ही स्तुति कर वह अपनी वाणी कृतकृत्य कर सकता है।

-:साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

मानवाधिकार केवल गैर हिन्दुओं के हैं?

बांग्लादेश हिन्दू : अब कहाँ गया मानवाधिकार आयोग?

....चिन्मय कृष्ण दास की गिरफ्तारी को ईयकायक की घटना नहीं है बल्कि एक सोची समझी राजनीति का हिस्सा है। पिछले महीने की 16 नवम्बर को बांग्लादेश में कट्टरपंथियों ने हिंदुओं को मारने- काटने की सरेआम धमकी दी थी। कट्टरपंथियों ने बांग्लादेश के इस्कॉन मंदिरों को ज़मींदोज़ करने की धमकी दी थी। सड़कों पर उतरी हजारों की भीड़ ने नारे लगाए, इस्कॉन वालों को पकड़ो, उनकी गर्दनें काट दो, इस्कॉन को मिटा दो। बांग्लादेश के हिंदुओं को 'मोदी का दलाल' कहा, हिंदुओं के नरसंहार की धमकी दी गई । हैरानी की बात ये है कि इस तरह के नारे सरेआम लगाए गए थे तब किसी पर एफ आई आर दर्ज नहीं हुई, जबकि मौलानाओं ने ज़हरीली तकरीरों में हिंदुओं की गर्दन काटकर यज्ञकुंड में डालने की धमकियां खुलेआम दी लेकिन बांग्लादेश की सरकार ने कट्टरपंथियों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की। उनके खिलाफ एक बयान तक नहीं दिया था।...

भारत में एक पहलु खान या अखलाक की हत्या पर संयुक्त राष्ट्र संघ तक शोर मचाने वाला मानवाधिकार आयोग लगता है, आज गुमशुदा हो गया है। बांग्लादेश में चुन-चुनकर हिंदुओं को मारा जा रहा है। हिंदुओं के खिलाफ वहां के मौलाना तकरीर पढ़ रहे हैं और फतवे भी जारी कर रहे हैं। बांग्लादेश सनातन जागरण मंच इस मामले में उनकी आवाज बना, किन्तु सनातन जागरण जोत मंच के प्रवक्ता, इस्कॉन के पुजारी चिन्मय कृष्ण दास को गिरफ्तार कर लिया गया। चिन्मय कृष्ण दास की गिरफ्तारी ऐसे समय में हुई है जब बांग्लादेश में हिंदू अल्पसंख्यकों पर हमलों की घटनाएँ लगातार बढ़ रही हैं। अगस्त में सत्ता परिवर्तन के बाद से हिंदू समुदाय के 205 से अधिक हमले दर्ज किए गए हैं। इनमें मंदिरों, व्यापारिक प्रतिष्ठानों और निजी संपत्तियों को निशाना बनाया गया। खुलना जिले में इस्कॉन मंदिर पर हमला कर भगवान जगन्नाथ की मूर्ति जला दी गई थी। इसके अलावा, 52 जिलों में हिंदुओं पर अत्याचार की खबरें आईं। और न सरकार बनने के बाद हिंदू समुदाय के 49 शिक्षकों से जबरन इस्तीफा ले लिया गया।

चिन्मय कृष्ण दास की गिरफ्तारी कोई यकायक की घटना नहीं है बल्कि एक सोची समझी राजनीति का हिस्सा है। पिछले महीने की 16 नवम्बर को बांग्लादेश में कट्टरपंथियों ने हिंदुओं को मारने-काटने की सरेआम धमकी दी थी। कट्टरपंथियों ने बांग्लादेश के इस्कॉन मंदिरों को ज़मींदोज़ करने की धमकी दी थी। सड़कों पर उतरी हजारों की भीड़ ने नारे लगाए, इस्कॉन वालों को पकड़ो, उनकी गर्दनें काट दो, इस्कॉन को मिटा दो। बांग्लादेश के हिंदुओं को 'मोदी का दलाल' कहा, हिंदुओं के नरसंहार की धमकी दी गई । हैरानी की बात ये है कि इस तरह के नारे सरेआम लगाए गए थे तब किसी पर एफ आई आर दर्ज नहीं हुई, जबकि मौलानाओं ने ज़हरीली तकरीरों में हिंदुओं की गर्दन काटकर यज्ञकुंड में डालने की धमकियां खुलेआम दी लेकिन बांग्लादेश की सरकार ने कट्टरपंथियों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की। उनके खिलाफ एक बयान तक नहीं दिया था।

इस्कॉन के खिलाफ ये रैली उलेमा (एकता) परिषद ने आयोजित की थी। इस रैली में ढाका के बड़े-बड़े उलेमा शामिल हुए थे। सबसे पहले बांग्लादेश सचिवालय के आसपास इंसानी ज़ंजीर बनाकर इस्कॉन पर पाबंदी लगाने की मांग की गई । इस्कॉन को आतंकवादियों की जमात बताया गया, इस्कॉन मंदिरों को काफिर दहशतगर्दों का अड्डा बताया गया। मौलानाओं ने कहा था कि अगर सरकार इस्कॉन पर पाबंदी नहीं लगाती तो बांग्लादेश के मुसलमान खुद इस्कॉन का खात्मा करेंगे, इस्कॉन के लोगों का सर कलम करेंगे। इस्कॉन के खिलाफ इस मुहिम की शुरुआत 2 हफ्ते पहले बांग्लादेश के दूसरे सबसे बड़े शहर चट्टग्राम से हुई थी। चट्टग्राम में मुस्लिम कट्टरपंथियों ने इस्कॉन पर बैन लगाने की मांग की थी, जिसका इस्कॉन ने विरोध किया। वहां के हिंदुओं ने जिहादियों का वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर करने का विरोध किया, जिसके बाद बांग्लादेश की पुलिस और सेना ने हिंदुओं के मुहल्ले में जमकर तांडव किया था। हिंदुओं को घर से घसीट-घसीटकर मारा-पीटा गया था।

ये कोई आज की कहानी नहीं है। 7 अगस्त की एक तश्वीर ने बांग्लादेश का भविष्य बता दिया था। यह एक ऐसी तस्वीर सामने आई थी। जो देश के वर्तमान और भविष्य की पूरी कहानी बयां करने के लिए काफी थी। ये तस्वीर बांग्लादेश के राष्ट्रपति के उस संबोधन की है, जब उन्होंने विपक्षी नेता खालिदा जिया की रिहाई के आदेश दिए। लेकिन गौर करने वाली बात ये है कि इस दौरान राष्ट्रपति अकेले नहीं थे, उनके साथ सेना के तीन अफसर दिखाई दे रहे थे। ये तीनों वहां की सेनाओं के टॉप अफसर थे।

तब सवाल ये खड़ा हुआ था कि क्या अब पाकिस्तान की तरह ही बांग्लादेश में भी सेना की ही चलेगी। क्या सरकार सेना के इशारों पर चलने वाली महज मजहबी कठपुतली बनकर रह जाएगी? अब चिन्मय दास की गिरफ्तारी का आधार क्या था, यही कि वह बांग्लादेश में हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचार को उजागर कर रहे थे। अब बताया जा रहा है कि चिन्मय कृष्ण दास की गिरफ्तारी का मुख्य आधार 25 अक्टूबर को चटगांव के लालदीघी मैदान में आयोजित एक रैली है, जिसमें उन्होंने भाषण दिया था। इस रैली में हिन्दुओं के हाथ में 'आमी सनातनी' लिखे भगवा ध्वज थे, जिसे लेकर जमात के गुंडे नाखुश थे।

चिन्मय कृष्ण दास के बारे में जो जानना चाहते हैं, उनके लिए बता दें कि चिन्मय कृष्ण दास बांग्लादेश के इस्कॉन मंदिर के प्रमुख हैं। इस मंदिर को पुंडरीक धाम के नाम से भी जाना जाता है। चिन्मय कृष्ण दास की अगुवाई में ही चटोग्राम में रैली की गई थी, जिसमें इस मंच की अगुवाई में हिंदुओं की सुरक्षा के लिए आवाज उठाई गई । चिन्मय कृष्ण दास की अध्यक्षता वाली रैली में अल्पसंख्यक सुरक्षा कानून, अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय के गठन, मंदिर-मठों की संपत्तियों की सुरक्षा से संबंधित कानून बनाने समेत 8 मांगें की गई थी।

देखा जाए तो आज बांग्लादेश के कट्टरपंथी उसी इस्कॉन को जड़ से मिटाने पर आमादा हैं, जिसने कभी 1971 में बांग्लादेश बनने के समय इस्कॉन ने मैडिसन स्क्वायर पर जॉर्ज हैरिसन और रविशंकर के साथ "सेव बांग्लादेश" लाइव शो का आयोजन किया था। पहले शो में ढाई लाख डॉलर इकट्ठा हुए, जिससे इस्कॉन संस्था ने बांग्लादेश के भूखे लोगों को अनाज उपलब्ध कराया। उसके बाद 3 महीने के अंदर इस्कॉन संस्था ने जॉर्ज हैरिसन और पंडित रविशंकर के सहयोग से पूरी दुनिया से 25 लाख डॉलर बांग्लादेश के भूखे नंगे लोगों के लिए इकट्ठा किए। 1971 में यह रकम बहुत बड़ी होती थी। उसके बाद ढाका के इस्कॉन मंदिर में ही कई महीनों तक एक लाख से ज्यादा लोगों को खाना खिलाया गया। इतना ही नहीं, इस्कॉन के लोग गाड़ियों में खाना रखकर पूरे बांग्लादेश में भूखे लोगों को खाना देते थे। और आज यह एहसान फरामोश कट्टरपंथी इस्कॉन के उस एहसान को भूल गए हैं, जिसने इन्हें भूखे नंगे को खाना और कपड़ा दिया तथा इन लोगों का पेट 2 साल तक भरा गया था। आज बांग्लादेश में उसी इस्कॉन के हिंदू समुदाय के प्रमुख चेहरे और इस्कॉन मंदिर से जुड़े चिन्मय कृष्ण दास की ज़मानत याचिका खारिज करते हुए कोर्ट ने उन्हें जेल भेज दिया है। उन पर देशद्रोह का मामला दर्ज किया गया है।

- शेष पृष्ठ 7 पर

स्वास्थ सन्देश

सर्दी में जुकाम से रहे सावधान

''जुकाम एक तरह का वायरल इन्यफैक्शन होता है। अब तक जुकाम के वायरसों की प्रजातियों का पता लगाया जा चुका है। अमूमन सभी प्रजातियों का प्रकोप एक तरह का ही होता है। अपने साथ रहने वालों, एक बेड पर साथ सोने वालों, ऑफिस, घर, फैक्ट्री, हास्टल आदि में साथ रहने वालों मेले या भीड़-भाड़ की जगह में जाने वालों में यह रोग जल्दी-जल्दी होता है। किसी भी वजह से शरीर की इम्यूनिटी पॉवर (रोग प्रतिरोधक ताकत) कम हो गयी हो, अचानक ठण्ड लगने पर या फिर नाक की श्लेष्मकता पहले से ही धूल, धुआं आदि से प्रभावित हो तो ऐसे में यह रोग बड़ी सरलता से पनपता है। समय रहते अगर जुकाम का उपचार कर लिया जाये तो तीन-चार दिनों में ही यह ठीक हो जाता है। कई लोगों का पुराना जुकाम तो पीनस या नजले में परिवर्तित हो जाता है। ऐसे में इन लोगों को बहुत ही कष्ट का अनुभव होता है अगर जुकाम बिगड़ जाये तो इसका परिणाम बहुत घातक होता है। जुकाम में खांसी और फिर टी.बी. होने के बारे में तो लगभग सभी को पता है।''

सर्दी में जुकाम के प्रति ज्यादातर लोग लापरवाही बरतते हैं जो कि ठीक बात नहीं है। जुकाम के प्रति लापहवाही अक्सर गंभीर रुख अख्तियार कर लिया करती है। यह जुकाम से पीड़ित व्यक्ति के खांसने और छींकने के द्वारा एक से दूसरे व्यक्ति में फैलता चला जाता है। जब-जब मौसम परिवर्तित होने पर शरीर के जो हिस्से सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं वह नाक, कान और गला है। मौसम परिवर्तन के वक्त आपने देखा होगा कि उस वक्त हर दूसरा तीसरा व्यक्ति जुकाम से पीड़ित हुआ होता है। जैसे ही व्यक्ति को जुकाम होता है, वैसे ही बड़ी तेजी से उसकी नाक बहने लगती है और उसे बार-बार छींके आने लगती हैं और अनेक लोग ऐसे भी होते हैं जिन्हें साल में कई-कई बार जुकाम सताया करता है।

जुकाम एक तरह का वायरल इन्फैक्शन होता है। अब तक जुकाम के वायरसों की 200 प्रजातियों का पता लगाया जा चुका है। अमूमन सभी प्रजातियों का प्रकोप एक तरह का ही होता है। अपने साथ रहने वालों, एक बेड पर साथ सोने वालों, आफिस, घर, फैक्ट्री, हास्टल आदि में साथ रहने वालों मेले या भीड़-भाड़ की जगह में जाने वालों में यह रोग जल्दी-जल्दी होता है। किसी भी वजह से शरीर की इम्यूनिटी पॉवर (रोग प्रतिरोधक ताकत) कम हो गयी हो, अचानक ठण्ड लगने पर या फिर नाक की श्लेष्मकता पहले से ही धूल, धूआं आदि से प्रभावित हो तो ऐसे में यह रोग बड़ी सरलता से पनपता है। समय रहते अगर जुकाम का उपचार कर लिया जाये तो तीन-चार दिनों में ही यह ठीक हो जाता है। कई लोगों का पुराना जुकाम तो पीनस या नजले में परिवर्तित हो जाता है। ऐसे में इन लोगों को बहुत ही कष्ट का अनुभव होता है, अगर जुकाम बिगड़ जाये तो इसका परिणाम बहुत घातक होता है। जुकाम में खांसी और फिर टी.बी. होने के बारे में तो लगभग सभी को पता है।

लक्षण

* रोग की शुरूआत में रोगी को अपने नाक बंद सी महसूस होती है। नाक में कुछ जलन होने लगती है, गला कुछ सूखा हुआ सा और दुखता हुआ सा लगता है, जिससे उसको मुंह से सांस लेनी पड़ती है।

* रोगी की नाक में खुजली होने लगती है, छींके आने लगती हैं, सिर में दर्द रहने लगता है और नाक से पतला कृाव गाढ़ा हो जाया करता है। तब नाक में पानी आने के बाद रोगी की छींके आनी बंद हो जाया करती है।

* रोगी का सारा शरीर दुखने लगता है और उसे भारीपन से महसूस होने लगता है।

* रोगी की नाक से गरम-गरम हवा निकलने लगती है। कभी-कभी रोगी को बुखार भी हो जाया करता है।

* रोगी को भूख कम लगती है।

* रोगी बेचैन सा रहने लगता है और उसे नींद भी कम आती है।

* जुकाम के रोगी को गंध का अहसास कम ही होता है।

* रोगी को सूखी खांसी होती है और उसकी आवाज बैठ सी जाती है।

निवारण

* जुकाम ठीक करने की कोई औषधि एलोपैथी में नहीं है। ऐलोपैथिक औषधियों से बस जुकाम की पीड़ा को थोड़ा कम किया जा सकता है। इसलिए इस रोग को जड़ से मिटाने के लिए जड़ी-बूटियों तैयार औषधियों से ही छुटकारा पाया जा सकता है।

शेष पृष्ठ 7 पर

बाल बोध

सफलता का रहस्य

''सफलता का आनंद उन्हें ही मिलता है जो असफलता के सामने कभी घुटने नहीं टेकते, हिम्मत और हौसले के संघर्ष करते हैं। क्योंकि जीवन में कोई भी हार अन्तिम पराजय नहीं होती, बशर्ते विजय का प्रयास न छोड़ा जाए। सफलता के सदैव दो पक्ष होते हैं। सफलता के लिए पुरुषार्थ करना आवश्यक है, असफलता के लिए नहीं। बुद्धिमान व्यक्ति असम्भव को सम्भव नहीं बनाता लेकिन सम्भावनाओं को उजागर अवश्य करता है। असफलता से सफलता की ओर कदम बढ़ाने के लिए प्रस्तुत प्रेरक लेख स्वयं पढे और अन्यों का पढ़ाएं।''

सफलता का आनंद उन्हें ही मिलता है जो असफलता के सामने कभी घुटने नहीं टेकते, हिम्मत और हौसले के संघर्ष करते हैं। क्योंकि जीवन में कोई भी हार अन्तिम पराजय नहीं होती, बशर्ते विजय का प्रयास न छोड़ा जाए। सफलता के सदैव दो पक्ष होते हैं। सफलता के लिए पुरुषार्थ करना आवश्यक है, असफलता के लिए नहीं। बुद्धिमान व्यक्ति असम्भव को सम्भव नहीं बनाता लेकिन सम्भावनाओं को उजागर अवश्य करता है। असफलता से सफलता की ओर कदम बढ़ाने के लिए प्रस्तुत प्रेरक लेख स्वयं पढे और अन्यों का पढ़ाएं।

असफलता सफलताओं का मार्ग तैयार करती है। विचारक वैटसन का कहना है कि जिन्हें सफलता की चाह हो उन्हें असफलता की दर दोगनी कर देनी चाहिए। असफलताओं से मिले अनुभव ही सफल मार्ग के पथ प्रदर्शक बन जाते हैं।

इतिहास साक्षी है कि सफलता की कहानियों का आधार असफलता की बड़ी श्रंखला होती है। फिर जो उत्साही लोग इस उपरोक्त तथ्य को जानते हैं वे असफलता से निराश नहीं होते, अपितु उन्हीं असफलताओं से सबक लेते हुए सफलता के रास्ते खोज निकालते हैं। महान वैज्ञानिक थॉमस एल्वा एडिसन ने जब बल्ब का आविष्कार किया तो सैकड़ों बार असफल हुआ। किसी ने व्यंग्य करते हुए इस वैज्ञानिक को कहा महाशय आप इस अविष्कार में इतनी अधिक बार असफल हुए हैं। उत्तर में एडिसन ने कहा नहीं, असफल नहीं अपितु मैंने सीखा है कि अमुक तरीकों से बल्ब नहीं बनता।

यहां कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं उन विशिष्ट व्यक्तियों के जिन्होंने असफलता से हार नहीं मानी, अपितु जीवन को संघर्ष का ही पर्याय मानकर जूझते रहे और जीवन की बुलन्दियों को छुआ। यह उस व्यक्ति की जीवन्त कथा है जो 21 वर्ष की आयु में व्यापार में असफल हुआ, 26 साल की उम्र में उसकी पत्नी का देहान्त हो गया, 27 साल की उम्र में कांग्रेस का चुनाव हार गया, 45 साल की उम्र में सीनेट का चुनाव हारा, 47 साल की उम्र में उपराष्ट्रपति बनने के प्रयास में नाकामयाब रहा, फिर 49 साल की उम्र में सीनेट चुनाव हार गया और 52 साल की उम्र में अमेरिका का राष्ट्रपति चुना गया।

यह व्यक्ति अब्राहम लिंकन था। इस व्यक्ति ने असफलता को मार्ग की बाधा तो माना पर हार मानकर बैठ नहीं गया और अमेरिका जैसे देश में सर्वोच्च चुना पास एक पुरानी कार और सिक्युरिटी से प्राप्त सिर्फ 100 डॉलर थे। इतने से उन्होंने कुछ व्यापार करने की योजना बनाई, उन्हें मां द्वारा सिखाई गई रेसपी याद थी। उन्होंने एक हजार दरवाजे खटखटाए, तब कहीं जाकर उन्हें पहला खरीददार मिला। प्राय: हम दो अथवा पांच कोशिशों के पश्चात हार मानकर बैठ जाते हैं और मन को सान्त्वना देते हैं कि जितना हमसे हो सकता था हमने किया। युवा कार्टूनिस्ट वाल्ट डिस्नी के कार्टूनों को बहुत संपादकों ने घटिया बताते हुए लौटा दिया। एक बार चर्च अधिकारी ने उन्हें कार्टून बनाने का काम दिया। वाल्ट डिस्नी चर्च के पास चूहों से भरे एक छोटे से कमरे में बैठे अपना काम कर रहे थे। एक नन्हें चूहे को देखकर उसे कुछ नया करने की सूझी और वहीं से मिकी माऊस की शुरुआत हुई।

एक दिन ऊंचा सुनने वाला चार साल का बच्चा अपनी टीचर के द्वारा दिए गए नोट के साथ घर पहुंचा। उस नोट पर लिखा था, ''आपका टामी इतना बेवकूफ है, कि कुछ सीख नहीं सकता, इसे स्कूल से निकाल लीजिए। उसकी मां ने नोट पढ़कर उत्तर भेजा, मेरा टामी बेवकूफ नहीं है, मैं उसे खुद पढाऊंगी और यही टामी बड़ा होकर महान् वैज्ञानिक थामस एडीसन बना। थामस ने सिर्फ तीन महीने स्कूल की पढ़ाई की थी।''

हेनरी फार्ड ने जो पहली कार बनाई थी उसमें रिवर्स प्रति डालना ही भूल गये

- जारी पृष्ठ 7 पर

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज

98वें बलिदान दिवस (23 दिसम्बर) पर शत-शत नमन

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के महान शिष्य स्वामी श्रद्धानंद जी का जन्म पंजाब प्रांत के जालंधर जिले के तलवन ग्राम में सन 1856 में हुआ। महर्षि दयानंद सरस्वती जी के प्रभाव से आपके जीवन की धारा बदली, सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने के पश्चात् वैदिक शिक्षा प्रणाली में आपकी श्रद्धा बढ़ी तो आप अपने पूर्व नाम (मुंशीराम) से स्वामी श्रद्धानंद बन गए। सन 1902 में आपने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की। मोहनदास कर्मचंद गांधी को महात्मा की उपाधि आपने दी। आपने समाज सुधार की शुरुआत प्रथम अपने परिवार से ही की थी, अपने दोनों पुत्र इंद्र और हरिश्चंद्र का जातिवाद की दीवारें तोड़कर अंतरजातीय विवाह कर मानव समाज के सामने एक प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत किया था। 4 अप्रैल सन 1916 को मुस्लिम नेताओं ने आपको दिल्ली के जामा मस्जिद में जब हिंदू मुस्लिम एकता के लिए भाषण देने हेतु आमंत्रित किया तो आपने जामा मस्जिद के मिम्बर से अपना भाषण वेद मंत्र ***"ओम त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता...."*** से प्रारंभ कर हिंदू मुसलमानों का पिता और माता एक ही ईश्वर है का संदेश दिया।

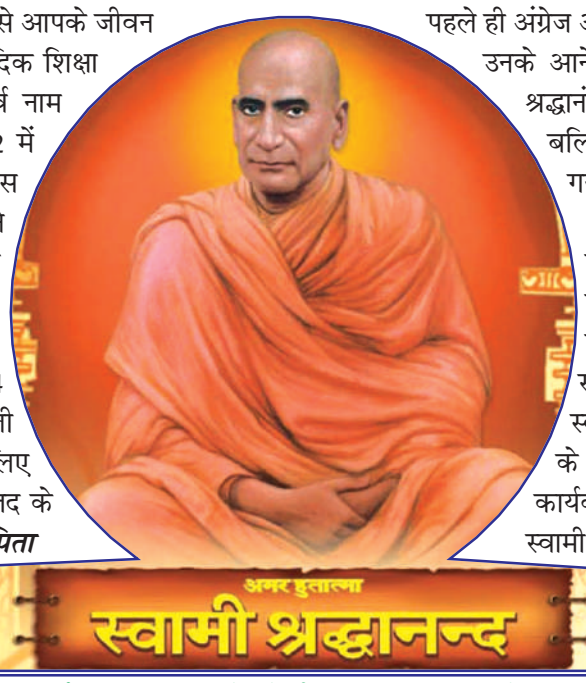

- महर्षि दयानंद सरस्वती जी के अनन्य शिष्य स्वामी श्रद्धानंद जी ने वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रचार प्रसार एवं आर्ष शिक्षा पद्धति की पुनर्स्थापना हेतु 1902 में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार की स्थापना की।
- 4 अप्रैल 1916 को स्वामी श्रद्धानंद जी ने जामा मस्जिद के मैम्बर से अपने भाषण का आरंभ त्वं ही नः पिता वेद मंत्र द्वारा करके एक नया इतिहास रचा।
- 30 मार्च 1919 को अंग्रेजी हुकूमत द्वारा जन विरोधी रोलेट एक्ट के विरोध में संगीनों के सामने सीना खोलकर आपने अंग्रेजों का ललकारा- चलाओ गोली, स्वामी जी के इस अदम्य साहस और वीरता के सामने अंग्रेजों की संगीने भी झुक गई थी।
- अमृतसर में जलियांवाला बाग कांड घटित होने के बाद 1919 में कांग्रेस अधिवेशन के आप स्वागताध्यक्ष बने। स्वामी जी द्वारा संचालित दलितोद्धार हेतु शुद्धि अभियान लगातार चलता रहा, भीमराव अंबेडकर आपको गरीबों का मसीहा और महात्मा गांधी सम्मान से बड़ा भाई कहते थे।
- स्वामी श्रद्धानंद जी ने भारत राष्ट्र को लोक अदालतों का विचार दिया, पहला राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्र प्रकाशित किया, सांप्रदायिक सद्भाव की मिसाल कायम की, लोक कल्याण के लिए अपनी समस्त संपत्ति दान करने का प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत किया।
- 23 दिसम्बर 1926 को एक उदण्ड मुस्लिम अब्दुल रसीद नामक व्यक्ति ने धोखे से स्वामी श्रद्धानंद जी के ऊपर ताबड़तोड़ गोलियां चला दी, जिससे भारत और आर्य समाज की आन, बान और शान के प्रतीक स्वामी जी सदा सर्वदा के लिए अमर हो गए।

सन 1919 में जब अंग्रेजी हुकूमत ने भारत देश पर रोलेट एक्ट लागू किया तो इस एक्ट के विरोध में 29 मार्च को स्वामी श्रद्धानंद जी की अध्यक्षता में एक विराट सभा हुई, चारों तरफ से लोग दिल्ली में इस एक्ट का विरोध करने के लिए आने लगे और 30 मार्च को स्वामी जी ने हड़ताल को उचित और सरकार की दमन नीति का विरोध करते हुए जनता से अपने भाषण में कहा कि आप भगवान से प्रार्थना करें और इतनी प्रबल प्रार्थना करें कि सात समंदुर पार अंग्रेजों के हृदय परिवर्तित हो जाएं। इसी संघर्ष में 30मार्च 1919 के दिन एक बड़ी घटना घटित हुई, रोलेट एक्ट के विरोध में स्वामी जी लगभग पच्चीस हजार के करीब लोगों को संबोधित कर रहे थे, तभी स्वामी जी को पता चला कि घंटाघर पर गोलियां चल रही हैं, स्वामी जी वहां गए और जनता को शांत रहने के लिए कहा, घंटाघर की ओर स्वामी जी को आता देख गोरखा सैनिकों ने स्वामी जी के सामने आकर उनके सीने पर बंदूक तान दी, स्वामी जी ने उद्दंड गोरखा अधिकारी से कहा लो मैं खड़ा हूं तुम चलाओ गोली, उनके चुनौती देने पर कुछ सैनिक आगे भी बढ़े और स्वामी जी के सीने पर संगीनें तान दी, इस तनातनी में कुछ अनर्थ घटित होता उससे पहले ही अंग्रेज अधिकारी वहां पहुंच गए और गोरखा अधिकारी को रोका, उनके आने से तनी हुई संगीनों नीचे की ओर झुक गई। स्वामी श्रद्धानंद जी का अदम्य साहस, उनकी वीरता और समाज पर बलिदान देने का जज्बा आज पूरे देश में आग की तरह फैल गया था।

स्वामी श्रद्धानंद जी ने शुद्धि आंदोलन का कार्य लगातार चलाए रखा। उन्होंने अस्पृश्यों, दलितों और आदिवासियों के धर्मांतरण पर जो रोक लगाने का महत्वपूर्ण कार्य किया, वह अपने आप में अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध हुआ। स्वामी श्रद्धानंद जी सन 1919 में जब अमृतसर कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष निर्वाचित हुए तो उस अधिवेशन में आपने दलितों के उद्धार की बात उठाई, लेकिन महात्मा गांधी और कांग्रेस कार्यकारिणी के सदस्यों ने इस प्रस्ताव की उपेक्षा की, तब स्वामी जी ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा दलितोद्धार सभा की स्थापना की। स्वामी श्रद्धानंद ने 1924 में हिंदू नेताओं और कांग्रेसियों को चेतावनी देते हुए कहा था कि यदि आपने अस्पृश्य कहे जाने वाले भाइयों के उद्धार की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया तो मैं आपको सचेत करना चाहता हूं कि वह वह दिन दूर नहीं जब आपके दलित अस्पृश्य भाई आपसे सब तरह का संबंध तोड़ कर दूसरे संप्रदायों में चले जाएंगे।

स्वामी श्रद्धानंद जी की यह दूरदृष्टि 32 वर्ष बाद तब सत्य सिद्ध हुई जब 1956 में डॉक्टर भीमराव अंबेडकर ने नागपुर में लाखों दलितों के साथ बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया था। मुगल काल में हिंदू से मुस्लिम बने अपने भाइयों को वापिस हिंदू बनाने के लिए स्वामी जी ने अथक परिश्रम और पुरुषार्थ कर भारतीय हिंदू शुद्धि सभा, राजपूत शुद्धि सभा आदि का निर्माण कर सन 1922 में आगरा, मथुरा, भरतपुर और मेवात के लगभग 8,50000 मुसलमानों को स्वधर्म में लाने का कार्य महात्मा हंसराज, पंडित भोज दत्त आर्य मुसाफिर आगरा तथा राजपूती नेताओं के साथ मिलकर किया। स्वामी श्रद्धानंद जी का पूरा जीवन महर्षि दयानंद सरस्वती के द्वारा निर्देशित राष्ट्र एवं मानव सेवा को समर्पित रहा। 23 दिसंबर 1926 का दिन था, स्वामीजी रूग्ण अवस्था में आराम कर रहे थे। - *जारी पृष्ठ 6 पर*

भारत के परिवर्तन की नींव रखने वाले ✯ महर्षि दयानन्द के अमर वाक्य ✯

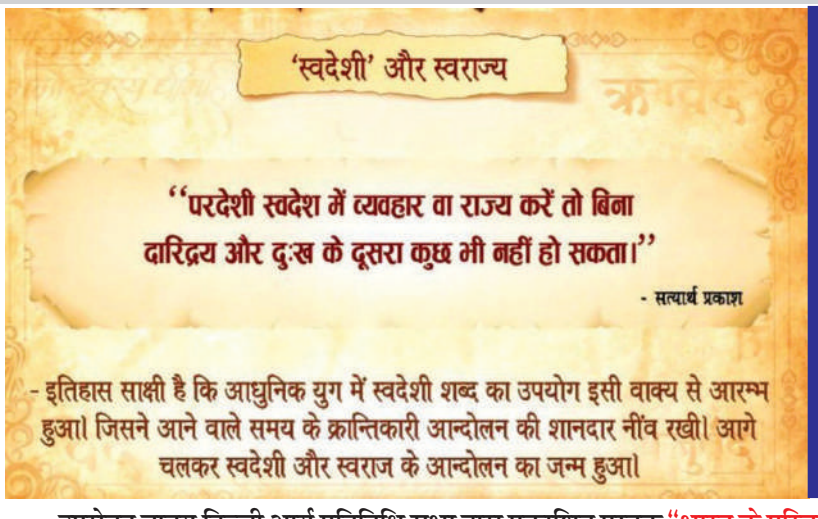

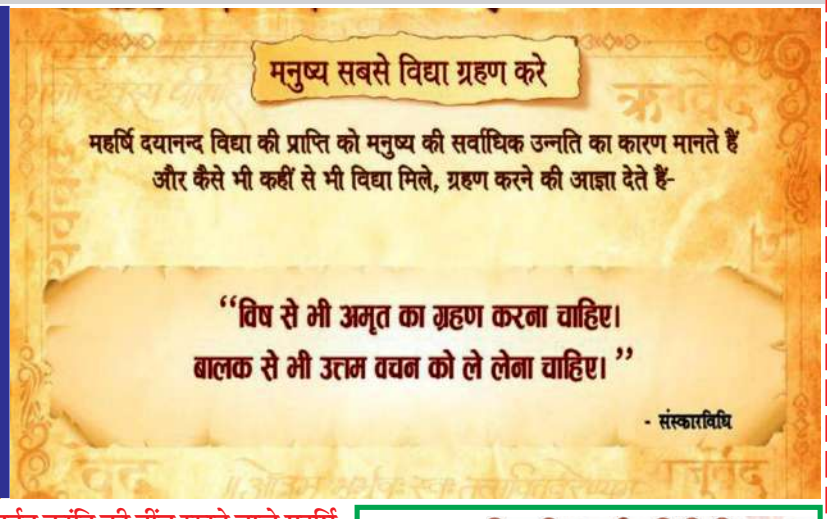

उपरोक्त वाक्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तक "भारत के परिवर्तन क्रांति की नींव रखने वाले महर्षि के अमर वाक्य" से साभार नियमित स्तम्भ के रूप में प्रस्तुत किए जा रहे हैं। इन वाक्यों को पढ़कर आप महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के विचारों, सिद्धान्तों और आर्यसमाज की मान्यताओं से परिचित हो सकते हैं तथा सोशल मीडिया पर प्रसारित करके परोपकार में सहभागी भी बन सकते हैं। पुस्तक प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें अथवा दिया गया कोड स्कैन करें -

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
सम्पर्क सूत्र : 9540040339

कादिरागंज, नवादा (बिहार)

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती की दो वर्षीय कार्ययोजना के अवसर पर बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा नवादा ने मनाया ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव

4 दिवसीय महोत्सव के बीच कादिरागंज में हुआ जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय का शिलान्यास

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस पर पूरे देश और दुनिया में जो उमंग, उत्साह और उल्लास की लहर चल रही है, उसका विहंगम दृश्य जिला आर्य प्रतिनिधि सभा नवादा बिहार द्वारा चार दिवसीय भव्य आयोजन में दृष्टिगत हुआ। इस अवसर पर प्रतिदिन यज्ञ, भजन और प्रवचनों के प्रेरक कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनसे सभी क्षेत्रीय आर्य नर-नारी लाभान्वित हुए। कार्यक्रम में बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान एवं सिक्किम के पूर्व राज्यपाल बाबू गंगा प्रसाद जी तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम के अंतर्गत एक विशेष शोभा यात्रा का आयोजन भी किया गया, जिसमें पूरे क्षेत्र में आर्य समाज अमर रहे, महर्षि दयानंद सरस्वती की जय और ओम का झंडा ऊंचा रहे के गगन में नारों से सारा वातावरण तरंगायित हो गया। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा नवादा बिहार के द्वारा कदीरा गंज में सभा कार्यालय का शिलान्यास किया गया। जिसका उद्घाटन सिक्किम के पूर्व राज्यपाल बाबू श्री गंगा प्रसाद जी की उपस्थिति में श्री विनय आर्य जी महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

- शेष पृष्ठ 7 पर

दिल्ली सभा का प्रकल्प : घर-घर यज्ञ- हर घर यज्ञ

दिल्ली में सघन वेद प्रचार के लिए महिलाओं द्वारा यज्ञ प्रशिक्षण सम्पन्न

भविष्य में होने वाले यज्ञों के बड़े आयोजनों का नेतृत्व करेंगी प्रशिक्षित महिलाएं - विनय आर्य, महामन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित सेवा प्रकल्पों में नारी जाति के सम्मान और उत्थान को हमेशा विशेष महत्व दिया जाता रहा है। जिसमें महिलाओं को स्वरोजगार, स्वावलम्बन और सशक्तिकरण के कई अभियान चलाए जा रहे हैं। इसक्रम में दिल्ली में स्थिति जय-जय कालोनियों में सभा के सम्वर्धक घर-घर यज्ञ, हर घर यज्ञ, के अर्न्तगत वैदिक विधि से संस्कार और यज्ञ करने का अभियान तो चला ही रहे हैं, इसके साथ ही अब एक नई पहल करते हुए वहां की महिलाओं को यज्ञ का प्रशिक्षण भी प्रदान किया जा रहा है। पश्चिमी दिल्ली में प्रचार-प्रसार का कार्य देख रहे सभा के प्रचारक आचार्य राजवीर शास्त्री जी के निर्देशन में सैकड़ों महिलाओं ने यज्ञ का प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया है। 3 दिसम्बर 2024 को शिव विहार, जय-जय कालोनी यज्ञ प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह 21 कुण्डीय सामूहिक यज्ञ के रूप किया गया, जिसमें सैकड़ों स्त्री-पुरुष और बच्चों ने आहुति देकर गौरव अनुभव किया। इस अवसर पर दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी, आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के महामंत्री बृहस्पति आर्य जी, सभा मंत्री श्री सुखबीर आर्य जी, आर्य केन्द्रीय सभा के मंत्री श्री डॉ मुकेश आर्य जी इत्यादि क्षेत्रीय वेद प्रचार मंडल एवं आर्य समाजो के अधिकारी उपस्थित रहे। श्री विनय आर्य जी ने इस अवसर पर उपस्थित प्रशिक्षित महिलाओं, प्रचारकों, यजमानों और सभी आयु वर्ग के महानुभावों को संबोधित करते हुए इस रचनात्मक और कल्याणकारी कार्य के लिए बधाई और शुभकामनाएं प्रदान की। आपने अपनी प्राचीन यज्ञीय संस्कृति का प्रमाण देते हुए यज्ञ के वैज्ञानिक रूप को सरलता समझाया और भविष्य में यज्ञों के बड़े आयोजनों में प्रशिक्षित महिलाओं द्वारा यज्ञ का नेतृत्व करने की बात कही। प्रेम सौहार्द के वातावरण में कार्यक्रम सफलता पूर्वक संपन्न हुआ और सभी ने एक दूसरे को बधाई दी।

नई दिल्ली

आर्य समाज हनुमान रोड का 103वां वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक संपन्न

यज्ञ, भजन, प्रवचन, भाषण प्रतियोगिता, महिला सम्मेलन और बच्चों की प्रेरक नाटिका रही विशेष आकर्षण का केन्द्र

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती एवं आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में आर्य समाज हनुमान रोड द्वारा 103वां वार्षिकोत्सव 28 नवंबर से 1 दिसंबर 2024 तक समारोह पूर्वक संपन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य योगेश जी के ब्रह्मत्व में यजुर्वेदीय यज्ञ में प्रतिदिन प्रात: काल आर्य समाज के सदस्यों और रघुमल आर्य कन्या सीनियर सेकेंडरी स्कूल की छात्राओं तथा अध्यापिकाओं ने आहुति देकर विश्व कल्याण की कामना की। सायंकाल बहन अमृता आर्या जी के मधुर और प्रेरक भजन अत्यंत सारगर्भित सिद्ध हुए और आचार्य योगेश जी के वेदों पर आधारित प्रवचनों ने उपस्थित आर्यजनों को वेद के अनुसार जीवनयापन करने का संदेश प्रदान किया। 29 नवंबर को स्त्री आर्य समाज द्वारा सम्मेलन हुआ, जिसमें माता निर्माता भवति पर विशेष

- शेष पृष्ठ 7 पर

साप्ताहिक स्वाध्याय

थियोसॉफी से सम्बन्ध

गतांक से आगे–

1878 ई॰ के जनवरी मास में महर्षि दयानन्द को अमेरिका से आया हुआ यह पत्र मिला–

To the Most Honourable
Pandit Dayanand Saraswati,
India.

Venerated Teacher, a number of American and other students who earnestly seek after Spiritual Knowledge, place themselves at your feet and pray you to enlighten them. The boldness of their conduct naturally drew upon them public attention and reprobation of all influencial organs and persons whose worldly interests or private prejudices were linked with the established order.

We have been called atheists, infidels and pagans.

We need the assistance not only of the young and enthusiastic, but also of the wise and venerated. For this reason we come to your feet as children to a parent and say, 'look at us, our teacher, teach us what we ought to do- Give us your counsel, your aid."

See that we approach you not in pride but humility, that we are prepared to receive your counsel do our duty as it may be shown to us.

(Sd.) Henry Olcott
President of the theosophical Society

'सेवा में परम सम्मानित पण्डित दयानन्द सरस्वती भारतवर्ष। सम्मानित गुरु, आध्यात्मिक विद्या से प्रेम रखने वाले कुछ अमेरिकन तथा अन्य विद्यार्थी, अपने को आपके चरणों में रखते हैं और प्रकाश की याचना करते हैं। उन लोगों के साहसिक व्यवहार ने कुदरतन उनकी ओर सर्व साधरण का ध्यान खींचा है और उन समाचार पत्रों तथा व्यक्तियों की ओर से, जिनके दुनियावी हित या निजी संस्कार पहले से विद्यमान स्थिति के साथ बंधे हुए हैं, उनका विरोध किया गया है।

हमें नास्तिक, अविश्वासी और धर्महीन कहा गया। हम केवल युवक और जोशीले लोगों की ही सहायता नहीं चाहते, बुद्धिमान् और सम्मानित लोगों की सहायता भी चाहते हैं। इस कारण हम आपके चरणों में इस प्रकार आते हैं जैसे पिता के चरणों में पुत्र आता है, और कहते हैं– हमारे गुरु महाराज! हमारी ओर देखिये और बताइए कि हमें क्या करना चाहिए।

देखिये कि हम आपकी सेवा में अभिमान से नहीं अपितु नम्रता से आते हैं और हम आपकी सलाह लेने और दिखाए हुए मार्ग पर चलकर कर्त्तव्य पालन के लिए उद्यत हैं। (ह०) हैनरी अल्कॉट
प्रेसीडेण्ट, थियोसोफिकल सोसाइटी

–क्रमशः

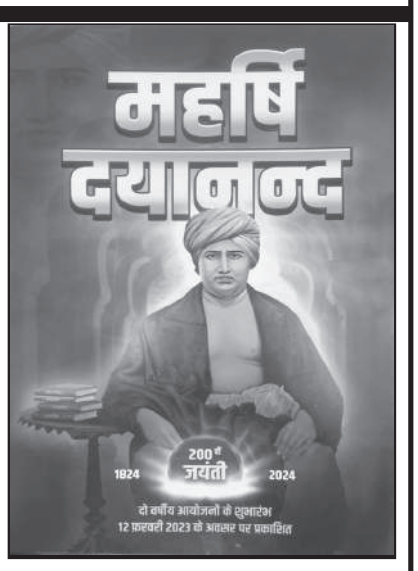

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुनः प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन
www.vedicprakashan.com
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Expansion of Arya Samaj

That day, he kept on denouncing Christianity till the end of the lecture. The very next day Inspector Lakshminarayan was summoned to Commi-ssioner's house. The commissioner send to the inspector,Pandit Swamiji not to act too strictly. We Christians are civilized people. We don't get scared strictly in debates, but if illiterate Hindus and Muslims lost their temper then your Swami Pandit's lectures will be stopped.'' The inspector came out promising to convey this message to Swamiji, but from where would he get the brave person to convey this message to Swamiji? He requested many persons, but no one could dare to move forward. Eventually he came across an atheist and he was assigned the responsibility to present the case. An atheist some other person accompanied the inspector to Swamiji. The atheist just said The inspector wants to say something because he was called by the Commissioner'.He shied away and all the trouble fell on the inspector. He shook his head and sometimes cleared his throat. After staring in amazement for five minutes, Swamiji said, ''Brother, you have no fixed time to do any work, so you cannot understand the value of time. My time is priceless. Say whatever you want to say''. On this the Inspector said, 'Maharaj, if strictly, what is the problem? This also will have a good effect, and then it is not good to make the Britishers angry. These words got stuck and with great difficulty came out of the mouth of the examiner. Maharaj laughed at this and what was the matter for which he begged, and wasted so much time? Your offiicer must have said that your pandit speaks strictly, lectures will be stoped. I not an Eve that I will take you. You should have told me directly, why did you waste so much time in vain?" A believing mythological Hindu was sitting there. He declared Swamiji as an avatar, he knows what is in your heart.

Well, whatever happened here happened. Now the condition of the lectures is worth mentioning. I have heard the speeches of Keshavchandra Sen, Lalmohan Ghosh, Surendranath Banerjee, Annie Besant and many other famous lecturers and that too in their growing up years. But I since- rely say that the effect that I felt in the simple words of that day, has not been seen till now, God knows what will happen in the future! That day there was a lecture on the nature of the soul. In this episode Maharaj started speaking on the basis of truth. All the English gentlemen of the day before were present except Pastor Scott. No man would move. Everyone was silently conce-ntrating and listening to the lecture. I do not remember the entire lecture, although I still feel its impact, but I will remember some words till death. The sage said- 'People say, don't reveal the truth. The collector will be angry, the commissioner will be displeased, the Governor will be pained. Even if King Chakravarti, is displeased, we will only speak the truth!' After reading that Upanishad-sentence in which it is written that no weapon can pierce the soul, nor fire can burn it_ he said in a roaring voice, ''The black body is impermanent. It is futile to commit unrighteousness in its protection. It can be destroyed by any one''. Then by throwing his sharp flame all around, he said while shouting, But bring me that heroic warrior,

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

पृष्ठ 4 का शेष

तभी एक मुस्लिम उदण्ड युवक ने स्वामी जी के कमरे के भीतर घुसकर उनके सीने पर पिस्तौल से फायर की, धर्म सिंह स्वामी जी का सेवक को उसे रोकने का अवसर भी न मिला और उसने स्वामी जी के नजदीक जाकर गोलियां दाग दी, धर्म सिंह ने आगे आकर उसको भुजाओं से जकड़ लिया और इस पकड़ा धकड़ी, गुत्थमगुत्था में धर्म सिंह को भी गोली लगी, गोली चलने की आवाज सुनकर दूसरे कमरे से उनके निजी सचिव धर्मपाल जी भी भाग पर आए और उन्होंने अब्दुल रशीद को कसकर पकड़ लिया, उधर धर्म सिंह के चिल्लाने की आवाज सुनकर स्वामी चिदानंद जी भी दौड़े चले आए, पंडित धर्मपाल इस हत्यारे को पकड़े हुए थे और एक तरफ स्वामी श्रद्धानंद चारपाई पर पड़े थे, इस आपाधापी में शुद्धि सभा के एक अन्य अधिकारी लाला मेहरचंद पुरी जी भी आ गए थे। उन्होंने इस भयावह दृश्य को देखा और झट से पुलिस को फोन लगाया। प्रोफेसर इंद्र विद्यावाचस्पति शुद्धि कार्यालय में उस समय थे, वे भी दौड़कर स्वामी जी के कमरे में आ गए और उन्होंने अपने पिता को खून से लथपथ हालत में देखा। स्वामी जी का शरीर मृत अवस्था में था, उनके सिरहाने की ओर धर्मपाल किसी व्यक्ति को दबोचे हुए थे, थोड़ी देर में पुलिस आ गई , एक पुलिस अधिकारी ने रिवाल्वर दिखाकर हत्यारे के हाथ से उसकी पिस्तौल छीन ली।जो अभी तक उसके हाथ में ही थी।अब्दुल रशीद को तत्काल बंदी बना लिया गया और दूसरे दिन स्वामी जी के शव की परीक्षा की गई ,उनके सीने में और पसली में गोलियां लगी थी, जिससे उनका सीना छलनी हो गया था। अब्दुल रशीद पर हत्या का संगीन आरोप लगा, दिल्ली के सेंट्रल जेल में अब्दुल रशीद को फांसी पर लटकाया गया। 24 दिसंबर को स्वामी जी की अंतिम यात्रा निकाली गई, जिसमें देश के अनेक प्रांतों से हजारों लोग दिल्ली आए थे उनकी यात्रा अभूतपूर्व थी, अब तक किसी भी व्यक्ति की अंत्येष्टि में इतने लोग इकट्ठा नहीं हुए थे जितने स्वामी जी की अंतिम यात्रा में आए थे। लोगों को कहना है कि इस अंतिम यात्रा में पांच से छह लाख के करीब लोग शामिल हुए थे। अंत में निगम बोध घाट पर स्वामी जी के पार्थिव देह को मुखाग्नि दी गई। भारतीय एकता के गगन का सितारा अपनी प्रखर ज्योति को जगमग करता हुआ अंतर्धान हो गया।

पृष्ठ 3 का शेष

सफलता का रहस्य....

थे। लोगों ने उनके इस उत्पादन के प्रति बड़ी निराशा प्रकट की। उन्होंने उत्साह नहीं खोया और आप आज जानते हैं कि हेनरी फोर्ड ने अपने उत्पादनों को किस मुकाम तक पहुंचाया।

बाह्य रूप से ऐसा लगता है कि सफल व्यक्तियों को कामयाबी भाग्य से मिली है पर उनकी संघर्ष की कहानी और असफलताओं में धैर्य की कथा से कम लोग ही परिचित होते हैं, वे हर बार गिरकर उठते हैं और ठोकरों से शिक्षा लेकर आगे बढ़ते हैं।

1914 में जब थॉमस एडीसन 67 वर्ष के थे तो उनकी फैक्टरी में आग लग गई। जिसमें लाखों डालर का सामान जलकर खाक हो गया। उस कम्पनी का बीमा बहुत कम था। एडीसन भी अब बूढे हो चुके थे और जीवन भर की मेहनत की कमाई अग्निसात होते देखकर बोले जो होता है, अच्छे के लिए होता है। हमारी सारी कमियां इसमें जलकर राख हो गई। ईश्वर की कृपा से हमें नए सिरे से कार्य करने के अवसर उपलब्ध हुए हैं। इतनी बड़ी हृदयविदारक घटना के सिर्फ तीन हप्ते बाद ही उन्होंने फोनोग्राम का अविष्कार किया था।

जिन्दगी में असफलता उतनी ही स्वाभाविक और सहज है जैसे फूलों संग कांटे। वे कांटे भी पुष्पों के सौन्दर्य को द्विगुणित करते हैं यदि हमारे पास देखने की दृष्टि हो तो दु:ख में जो निराशा मिलती है, निरुत्साह मिलता है, उसी से युद्ध करना पड़ता है, पुन: असफलता अपने में कोई चीज नहीं। हमें अपने हालातों के शिकार होने के बजाए ऊपर उठना चाहिए और हालातों पर विजय प्राप्ति के लिए हर सम्भव प्रयास करने चाहिए। जो आपको असफलता से सीख मिले उसे अपनी डायरी में नोट कर लें। उन्हीं सीखों के सहारे मंजिल का रास्ता खोजें। आज नहीं तो कल सफलता आपके कदमों में होगी।

-संपादक

पृष्ठ 2 का शेष

बांग्लादेश हिन्दू : अब कहाँ .....

बांग्लादेश में इस्कॉन के 77 से अधिक मंदिर हैं, जो देश के लगभग हर जिले में स्थित हैं। अहसान फरामोसी देखिए, इस्कॉन वाले इन्हें रमजान में इफ्तार की दावत भी देते हैं। दरअसल, बांग्लादेश में इस्कॉन तो बहाना है, असल में हिंदू समाज निशाना है। बांग्लादेश में हिंदुओं को डराने की कोशिश हो रही है, उन पर जुल्म हो रहा है, उनका जीना दूभर हो गया है, क्योंकि इस्लामी कट्टरपंथियों में कुछ लोग ऐसे हैं, जो बांग्लादेश को पूरी तरह इस्लामी मुल्क बनाना चाहते हैं। वहां तालिबानी तरीकों वाली सरकार चलाना चाहते हैं। इस समय की बांग्लादेश की सरकार इन्हीं कट्टरपंथियों के कब्जे में है। उन्हें किसी को भी धमकाने, मारने, काटने का लाइसेंस मिला हुआ है और हिंदुओं के पास एकजुट रहने के अलावा और कोई दूसरा रास्ता नहीं बचा है अपनी रक्षा खुद करनी होगी। चिन्मय कृष्ण दास के समर्थकों ने दावा किया है कि जेल में उनकी जान को खतरा है और यह गिरफ्तारी अल्पसंख्यकों की आवाज़ दबाने और उन्हें डराने का हिस्सा है। किन्तु इन सबके बीच गौर करने वाली बात यह है कि बांग्लादेश में हिंदुओं पर लगातार अत्याचार हो रहे हैं और मानवाधिकार आयोग एवं संयुक्त राष्ट्र संघ मौन साधे बैठा है।

-संपादक

पृष्ठ 3 का शेष

सर्दी स्वस्थ रहने के लिए .....

घरेलू उपचार भी जुकाम में बहुत फायदा पहुंचाते हैं। जिन लोगों को एलर्जिक जुकाम होता है, उन्हें इस बात की जानकारी करनी चाहिए कि उन्हें किस चीज से एलर्जी होती है। जानकारी होने पर उन्हें एलर्जी होने वाली चीजों से बचकर रहना चाहिए। इसी के साथ ही उन्हें नाक व मुंह पर मास्क लगाकर रखना चाहिए। जिन्हें बार-बार जुकाम होने की शिकायत रहती हो उन्हें हमेशा नाक से ही सांस लेना चाहिए। विटामिन ए.सी. और डी. युक्त वस्तुओं को ज्यादा सेवन करना चाहिए।

जुकाम का जड़ी-बूटी से उपचार

* काले जीरे को जलाकर उसका धुआं सूंघने से जुकाम ठीक होता है।

* राई के तेल पैरों और पैरों के तलवे पर मालिश करने से मस्तक की सर्दी और जुकाम एक रात में मिट जाते हैं। नाक पर इसके तेल की मालिश करने से नाक बहना तुरंत बंद हो जाता है।

* दो चम्मच अदरक का रस गर्म करके उसमें शहद मिला कर पीने से नजले-जुकाम का वेग कम होता है।

* चाय-पत्ती की जगह तेजपात के चूर्ण की चाय पीने से छींके आना और नाक बहना बंद होता है।

जुकाम का घरेलू उपचार

* अगर नाक से ज्यादा पानी जा रहा हो तो जरा सी कपूर निगल लें।

* जुकाम के रोगी को अदरक का एक छोटा टुकड़ा नमक लगाकर खाना चाहिए।

* जुकाम के प्रति कभी भी लापरवाही न बरतें। जुकाम से व्यक्ति टी.बी. रोग का शिकार सहज ही हो सकता है। इसलिए कभी भी जुकाम की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। घरेलू उपचार पर भी यदि जुकाम ठीक न हो तो तब आपको योग्य चिकित्सक से अपना इलाज अवश्य करवाना चाहिए। **-संपादक**

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

पृष्ठ 5 का शेष

आर्य समाज हनुमान रोड का 103वां ....

विचार मंथन हुआ, इस कार्यक्रम की संयोजक श्रीमती सुनीता बुग्गा जी थी। 30 नवम्बर को दिल्ली के गुरुकुलों, कन्या गुरुकुलों, आर्य विद्यालयों, 18 शक्षण संस्थानों के छात्र- छात्राओं श्री रतन लाल स्मारक भाषण प्रतियोगिता में भाग लिया। राष्ट्र को महर्षि दयानंद सरस्वती जी की देन विषय पर एक से बढ़कर एक भाषण देकर विद्यार्थियों ने निर्णायकों और श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। सबने महर्षि दयानंद की मानवजाति को देन के प्रति मन ही मन नमन किया। प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर आए प्रतियोगी छात्रों को शील्ड, मडल, नकद राशि, प्रमाणपत्र और साहित्य दिया गया तथा सभी प्रतियोगियों प्रोत्साहन के रूप में को नकद राशि और साहित्य देकर पुरस्कृत किया गया। 24 नवम्बर को आर्य समाज के प्रधान श्री नरेन्द्र हुड्डा जी धर्मपत्नी एवं स्त्री आर्य समाज की कोषाध्यक्षा श्रीमती अनिता हुड्डा के आकस्मिक निधन पर दो मिनट का मौन रखकर भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी गई ।

1 दिसंबर 2024 को यज्ञ की पूर्णाहुति एवं समापन समारोह के अवसर पर आचार्य योगेश जी द्वारा जीवन में संस्कारों कस विशेष महत्व एवं आचार्य योगेश भारद्वाज जी का वर्तमान में समाज की स्थिति कारण और निवारण विषय पर विशेष उद्बोधन अत्यंत मार्मिक और प्रेरणाप्रद सिद्ध हुआ। आपने समाज में गतिशील नीतियों को देश की उन्नति में अवरोध सिद्ध करते हुए लोकतन्त्र और प्रजातंत्र की वास्तविक प्रेरणा प्रदान की। रघुरमल आर्य कन्या सीनियर सैकेंडरी स्कूल की छात्राओं द्वारा महर्षि दयानंद की प्रेरणा से आर्य समाज द्वारा सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार, विधवाओं को विवाह का अधिकार विषय पर महत्वपूर्ण नाटिका प्रस्तुत की गई । जिसे देखकर उपस्थित जन समुदाय भावविभोर हो गया, सभी ने छात्राओं का उत्साहवर्धन किया और उन्मुक्त हृदय से प्रशंसा की। कार्यक्रम का संचालन समाज के उपमंत्री श्री विजय दीक्षित जी ने कुशलता पूर्वक किया और आर्य समाज के उपप्रधान श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी ने सभी वक्ताओं, अधिकारियों, कार्यकर्ताओं, रघुमल सकूल के समस्त स्टाफ और छात्राओं, श्रोताओं का आभार व्यक्त किया और शांति पाठ के साथ वृहद कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। - ***संजय कुमार, मंत्री***

पृष्ठ 5 का शेष

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा नवादा ने मनाया ...

कोर कमेटी के सदस्य ने अपने कर कमल से किया। श्री विनय आर्य जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी और आर्य समाज के महापुरुषों का स्मरण करते हुए पूरी मानव जाति को जो आर्य समाज की देन है उसका प्रेरक स्वरूप वर्णित करते हुए, वर्तमान परिस्थितियों में आर्य समाज की जिम्मेदारियां और राष्ट्र सेवा का संदेश दिया। आपने वर्तमान की चुनौतियों का समाधान आर्य समाज और महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं पर चलने को बताया। बाबू गंगा प्रसाद जी ने उपस्थित आर्यजनों को आशीर्वाद देते हुए महर्षि दयानंद सरस्वती जी के बताए रास्ते पर चलने का संदेश दिया।

कार्यक्रम में जिला आर्य प्रतिनिधि सभा नवादा के प्रधान श्री सत्यनारायण आर्य, मंत्री कुंदन आर्य, श्री जय नारायण आर्य, आर्य समाज नेमदारगंज के प्रधान श्री अश्वनी कुमार, मंत्री श्री रंजीत कुमार, आचार्य श्री संजय सत्यार्थी, कादिरागंज के मंत्री श्री मथुरा प्रसाद, श्री भोला प्रसाद आर्य, श्री जयप्रकाश आर्य, श्री कैलाश आर्य, श्री श्रीकांत आर्य, श्रीमती संतोष आर्या, श्री मनोज आर्य, श्री रविंद्र आर्य, श्री राकेश आर्य, श्री हरि नारायण इत्यादि महानुभव भारी संख्या में उपस्थित थे। प्रेम सौहार्द के वातावरण में सारा कार्यक्रम संपन्न हुआ सभी ने आर्य समाज के कार्यों को आगे बढ़ने का संकल्प लिया

- ***कुन्दन आर्य, मन्त्री***

केरल जो कभी वैदिक धर्म का केन्द्र था, वहां गत 100 वर्षों में क्या-क्या घटित हुआ, उन सत्य घटनाओं पर आधारित वीर सावरकर जी का प्रामाणिक उपन्यास अवश्य पढ़ें।

'मोपला'

प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-
वैदिक प्रकाशन
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष: 23360150, 9540040339

शोक समाचार

श्री वेद प्रकाश सिंघल जी का निधन

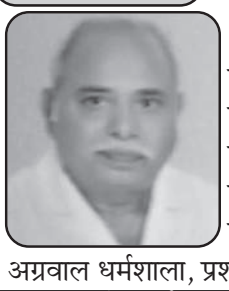

आर्यसमाज रोहिणी सैक्टर-7 के वरिष्ठ सदस्य श्री वेद प्रकाश सिंघल जी का दिनांक 29 नवम्बर, 2024 को लगभग 72 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। वे काफी लम्बे समय से अस्वस्थ चल रहे थें। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के सम्पन्न हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 11 दिसम्बर, 2024 को अग्रवाल धर्मशाला, प्रशान्त विहार, दिल्ली में सम्पन्न होगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 2 दिसम्बर, 2024 से रविवार 8 दिसम्बर, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 5-6-7/12/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 4, दिसम्बर, 2024

ओ३म्

200वीं महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024

महर्षि दयानन्द के अनन्य शिष्य, महान राष्ट्रभक्त, शिक्षाविद् आर्य समाज के नेता, स्वतंत्रता सेनानी, अमर बलिदानी

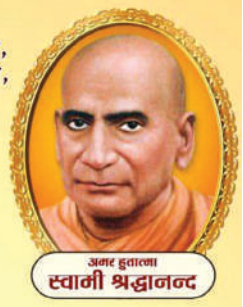

स्वामी श्रद्धानन्द

98वाँ बलिदान दिवस

बुधवार 25 दिसम्बर 2024

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयंती के विशेष आयोजनों की श्रृंखला में

भव्य शोभायात्रा व सार्वजनिक सभा

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार, दिल्ली

यज्ञ : प्रात: 8 से 9:30 बजे

शोभायात्रा का प्रारम्भ : प्रात: 10 बजे

सार्वजनिक सभा : मध्याह्न 12:30 से 3:30 बजे

रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, नई दिल्ली-2

इस अवसर पर वैदिक विद्वानों एवं आर्य कार्यकर्त्ताओं को स्मृति पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जायेगा

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर हजारों की संख्या में पहुंचकर संगठन का परिचय दें

निवेदक

सुरेन्द्र कुमार रैली	मनीष भाटिया	आर्य सतीश चड्ढा
प्रधान	कोषाध्यक्ष	महामन्त्री
9810855695	9910341153	9313013123

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य (पंजी०)

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

प्रतिष्ठा में,

विश्वभर में आर्यसमाज की लहराती पताकाओं को दर्शाता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वर्ष 2025 का कैलेण्डर प्रकाशित

आर्यसमाजें अधिकाधिक सख्या में अपने नाम से छपवाकर प्रचार करें

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 प्रतियों से अधिक के आर्डर पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
मो. 09540040339

ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें

www.vedicprakashan.com

ओ३म्

भारत में फेले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण
(अजिल्द) 23x36%16
मुद्रित मूल्य ₹80 प्रचारार्थ मूल्य ₹60

विशेष संस्करण
(सजिल्द) 23x36%16
मुद्रित मूल्य ₹120 प्रचारार्थ मूल्य ₹80

पॉकेट संस्करण
मुद्रित मूल्य ₹80 प्रचारार्थ मूल्य ₹50

विशिष्ट पॉकेट संस्करण
मुद्रित मूल्य ₹150 प्रचारार्थ मूल्य ₹100

स्थूलाक्षर
(सजिल्द) 20x30%8
मुद्रित मूल्य ₹200 प्रचारार्थ मूल्य ₹120

उपहार संस्करण
मुद्रित मूल्य ₹1100 प्रचारार्थ मूल्य ₹750

सत्यार्थ प्रकाश
अंग्रेजी अजिल्द
मुद्रित मूल्य ₹250 प्रचारार्थ मूल्य ₹160

सत्यार्थ प्रकाश
अंग्रेजी सजिल्द
मुद्रित मूल्य ₹300 प्रचारार्थ मूल्य ₹200

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group
Our milestones are touchstones

TECHNOLOGY DRIVING VALUE TOWARDS CREATING A CLEANER | GREENER | SAFER TOMORROW.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह